

---

shrIshabarigiryaShTakaM

श्रीशबरिगिर्यष्टकम्

Document Information

---

Text title : Shabarigiri Ashtakam

File name : shabarigiryaShTakam.itx

Category : deities\_misc, ayyappa, aShTaka

Location : doc\_deities\_misc

Proofread by : Mohan Chettoor

Description/comments : aShTakam book

Latest update : September 28, 2022

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीशबरिगिर्यष्टकम्



शबरिगिरिपते भूतनाथ ते जयतु मङ्गलं मञ्जुलं मङ्गः ।  
मम हृदिस्थितं ध्यान्तरं तवः नाशयद्भिदं स्कन्ध सोदर ॥ १ ॥

कान्तगिरिपते कामितार्थदं कान्तिमदृतव काङ्क्षितं मया ।  
दर्शयाद्भुतं शान्तिमन्मङ्गः पूर्यार्थितं शबरिविग्रह ॥ २ ॥

पम्पयाञ्चिते परममङ्गले दृष्टदुर्गमे गढनकानने ।  
गिरिशिवोदरे तपसिलालसं ध्यायतां मनः लुष्यति स्वयम् ॥ ३ ॥

त्वद्दिदृक्ष्य सञ्चितप्रताः तुलसिमालिङ्कः कम्पकन्धरा ।  
शरणा भाषिण शङ्घसोजन कीर्तयन्ति ते दिव्यवैभवम् ॥ ४ ॥

दृष्टशिक्षणे शिष्टरक्षणे भक्तकङ्कणे मिशतिते गणे ।  
धर्मशास्त्रे त्वयि य जाग्रति संस्मृते भयं नैव जायते ॥ ५ ॥

पूर्वापुष्पला सेविताप्यडो योगिमानसाम्भोज भास्करः ।  
हरिगजादिभिः परिवृतो भवान् निर्भयस्वयं भक्तभीडरः ॥ ६ ॥

वाय्विचर्त्तां दिव्यनामते मनसिसन्ततं तावदं मङ्गः ।  
श्रवणयोर्भवद्गुणगणालिः नयनयोर्भवत् मूर्तिरद्भुताः ॥ ७ ॥


करयुगं मम त्वद्पदार्यने पद्युगं सदा त्वद्प्रदक्षिणे ।  
जुवितं भवद्भक्तपूजने प्रगतमस्तुते पूर्णकरुणया ॥ ८ ॥

एति श्रीशबरिगिर्यष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Mohan Chettoor

---

pdf was typeset on September 16, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

